Open Or Transparent Peer Reviewed & Refereed Journal

ISSUE-29 VOLUME-4 IMPACT FACTOR- IIJIF-7.312

ISSN-2454-6283 July-September,2022

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

शोध-ऋतु

4

सम्पादक
डॉ. सुनील जाधव

तकनीकी सम्पादक
अनिल जाधव

पत्राचार हेतु कार्यालयीन पता -
डॉ.सुनील जाधव,
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,
हनुमान गढ़ कमान के सामने,
नांदेड-४३१६०५, महाराष्ट्र

web:- www.shodhritu.com
Email - shodhrityu78@yahoo.com
WhatsApp 9405384672

Scanned with CamScanner

शोध-ऋतु

Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका

Open Transparent PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-29 **VOLUME-4** ISSN-2454-6283 **July-sept.**–2022

IMPACT FACTOR - **(IIJIF-7.312)** **SJIF-6.586,** IIFS-4.125,

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक

डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड

9405384672

तकनीकी सम्पादक

अनिल जाधव, मुंबई

पत्राचार हेतु पता–

महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी, हनुमान गढ़ कमान के सामने, नांदेड–431605

Scanned with CamScanner

प्रकाशन/प्रकाशक
डॉ.सुनील जाधव
नव साहित्यकार
पब्लिकेशन, नांदेड–महाराष्ट्र

मुद्रण/ मुद्रक
तन्मय प्रिंटर्स,नांदेड
डॉ.सुनील जाधव,नांदेड

मेल पता shodhrityu78@yahoo.com
वेबसाइट www.shodhritu.com

"शोध–ऋतु ' तिमाही पत्रिका में आलेख लेखक निम्न बिन्दुओं पर अवश्य ध्यान दें ।
फॉण्ट–कृति देव 10 वर्ड फाइल में ही सामग्री स्वीकृत की जायेगी ।
आलेख पेज की मर्यादा चार पेज होगी ।
आलेख विशेषज्ञों द्वारा चयन किये जायेंगे ।
चयनित आलेख की सूचना मेल द्वारा आलेख लेखक को दी जायेगी ।
चयनित आलेख के लिए 1000रु प्रोसेसिंग शुल्क लिया जायेगा ।
लेखक मौलिक शोधपरक एवं वैचारिक आलेख ही भेंजे ।
व्हाट्स एप–9405384672

बैंक विवरण

NAME	SUNIL GULABSING JADHAV
BAINK	BANK OF MAHARASHTRA, WORKSHOP CORNER, NANDED, MAHARASHTRA
ACCOUNT NO.	2015 8925 290
IFSC CODE	MAHB0000720

PhonePe
ACCEPTED HERE
Scan & Pay Using PhonePe App

or Pay to Mobile Number using PhonePe App
9405384672
Sunil Jadhav

Scanned with CamScanner

वार्षिक परामर्श मंडल (2022)

- प्रो .डॉ.रामप्रसाद भट, हैम्बुर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी
- प्रो.डॉ.रंजित उपुल, केलनिया विश्वविद्यालय, श्रीलंका
- प्रो.डॉ.रिदिमा निशादिनी लंसकारा, श्रीलंका
- प्रो.डॉ.अनुषा सल्वाथुरा, श्रीलंका
- प्रो.डॉ.नुर्मातोव सिराजोद्दीन, उज्बेकिस्तान
- सौ.सविता तिवारी, मॉरिशस
- प्रो.डॉ.मक्सीम देम्चेंको, मास्को, रशिया
- प्रो.डॉ.हिदायतुल्लाह हकीमी, जलालाबाद, अफगानिस्तान
- प्रो.हुरुई,उप–संकायाध्यक्ष,अफ्रीकी–एशियाई भाषा एवं संस्कृति संकाय क्वान्तोंग विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, चीन
- प्रो.विवेक मणि त्रिपाठी, चीन
- प्राचार्य डॉ.आर.एन.जाधव,पीपल्स कॉलेज,नांदेड
- प्र.उपकुलपति डॉ.जोगेन्द्रसिंह बिसेन, स्वामी रामानंद तीर्थ विश्वविद्यालय, नांदेड
- प्रो.डॉ.मुकेशकुमार मालवीय, हिन्दू बनारस विश्वविद्यालय,बनारस
- प्रो.डॉ.राजेंद्र रावल,राजकोट,गुजरात
- प्रो.डॉ.अरविंद शुक्ल,उत्तर प्रदेश
- प्रो.डॉ.संगम वर्मा,पंजाब
- प्राचार्य.डॉ.राजेन्द्र प्रसाद,प्रतापगढ
- प्राचार्य डॉ.प्रवीण कुमार सक्सेना, गांगड़तलाई,राजस्थान
- प्रो.डॉ मंगला रानी, पटना
- प्रो.डॉ.पठाण रहीम, हैदराबाद
- प्रो.डॉ.श्यामराव राठोड, तेलंगाना
- प्रो.डॉ.भारत भूषण, पंजाब
- प्रो.डॉ.परिमल अम्बेकर, गुलबर्गा
- प्रो.डॉ.ओमप्रकाश सैनी, हरियाणा
- प्रो.डॉ.लक्ष्मी गुप्ता,यमुनानगर,हरियाणा
- डॉ.प्रदीप रेवाप्पा सरवदे, बारामती

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

1.सैकड़ों वर्ष पुरानी राजस्थान की अद्भुत कांवड़ कला 6
–पूजा श्रीवास्तव 6
2.नागपुरी पद्य साहित्य में श्री पार्थ नन्द तिवारी का योगदान 8
–सुषीला लकड़ा 8
3.नागपुरी कवि अर्जुन भगत के रचनाओं में जमींदारी व नागवंशी शासकों का उल्लेख 10
–पुनम कुमारी 10
4.Historicizing the Relations Between Ecology, Economy and Polity of 18th Century Marwar, Rajasthan 11
-Rashi Raman 11
5.बकरी नाटक की मूल परानुभूति 15
–डॉ.मीना शर्मा 15
6.महाभारत में शारीरिक स्वास्थ्य–विमर्श 17
–हितेश मीना 17
7 Principle of 'Residual Doubt': A New Era of Sentencing 20
-[1]Surya Kant Dhar Dubey, [2]Dr Shiwal Satyarthi 20
8.हिन्दी साहित्य में दलित चिंतन :(प्रेमचन्द के परिप्रेक्ष्य में) 25
–डॉ.आशा देवी 25
9.भारतीय संस्कृति का शिक्षा दर्शन 29
–डॉ0नवलकिशोर 29
10.महात्मा गांधीजींचे अहिंसेसंबंधी विचार 30
–प्रा.डॉ स्वामी विरभद्र गुरप्पा 30
11.जाती प्रथा 32
–अश्वनी कुमार 32
12.वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों उपन्यासों में चित्रित नारी 34
–डॉ.बी.कन्नाम्मल देवी 34
13.देहाती पृष्ठभूमि को दर्शाती केदारनाथ सिंह की कविताएँ 36
–पंचदेव प्रसाद 36
14.महिला आत्मकथा लेखन में नारी चेतना 39
–डॉ.बिपिन यादव 39
15.शिक्षा के दार्शनिक आधार एवं आधुनिक शिक्षा पर उनका प्रभाव 42
–कुसुम कुमारी 42
16.मिस्टर जिन्ना नाटक में विभाजन की त्रासदी बनाम राजनीति 43
–दविंदर सिंह 43
17.उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के स्व–प्रत्यय एवं अनुशासन का अध्ययन 45

Scanned with CamScanner

–[1]डॉ० ब्रजेश कुमार शर्मा,[2]डॉ० संजय भुईया,[3]मंजुश्री प्रामाणिक.....45
18.Gender and Climate Change.....48
-[1]Pramod Kumar Gangwar, [2]Mohammad Tariq Khan 48
19.Blasphemy Law And Freedom Of Expression In India; An Overview.....51
-[1]Porf. (Dr.) Ashok Kumar Rai,[2]Dr. Vivek Singh 51
20.साम्प्रदायिकता और यशपाल का कथा साहित्य 55
–[1]प्रकाश चन्द्र मिश्र, [2]डॉ0चन्द्र शेखर सिंह.....55
21.संत साहित्य की उपादेयता (संत नामदेव जी के संदर्भ में).....57
–डॉ. सरवदे प्रदीप रेवाप्पा.....57

ISSN-2454-6283 (PEER Reviewed JOURNAL)

Scanned with CamScanner

उपस्थिति नहीं है, वहाँ वह विद्यमान है। वहाँ हिन्दी के रचनाधर्मी लेखकों ने उसपर प्रहार किये हैं। उसके अमानवीय चरित्र को बेनकाब किया है, उसके खिलाफ लिखा है। व्यापक स्तर पर वह रचनाओं का विषय भले न बनी हो, किन्तु जहाँ बनी है वहाँ वह विरोध का ही लक्ष्य बनी है। हिन्दी लेखकों ने इस क्षुद्र, संकीर्ण साम्प्रदायिक मानसिकता के पक्ष में कभी नहीं लिखा, किन्तु साथ ही एक दूसरा और अधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न हम करते हैं, वह है कि 'साम्प्रदायिक विरोध की इतनी शानदार रचनाधर्मी परम्परा के होते हुए भी, क्या कारण है कि हमारा साहित्य सामाजिक जीवन पर आम नागरिकों के हृदय–मन पर अपना प्रभाव नहीं डाल पा रहा।' "आज भी जब–तब साम्प्रदायिकता समाज में अपना नंगा नाच करने लगती है, जबकि हमारा सार्थक साम्प्रदायिकता विरोधी लेखन और हमारे सेक्युलर रचनाकार यशपाल आदि जनता द्वारा पढ़े जाने के बावजूद विचार तथा आचरण में उपेक्षित से रह जाते हैं और उनके उद्देश्यों की पूर्ति नहीं हो पाती।"[6]

अतः कहाँ जा सकता है कि कथाकार यशपाल ने अपने कथा साहित्य में साम्प्रदायिकता की भयंकरता को प्रस्तुत कर प्रत्यक्ष किया है कि साम्प्रदायिकता की जो मनोवृत्ति हमारे वर्तमान सामाजिक जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग लगने लगी है, वह राष्ट्र के अस्तित्व तथा मानवता के अस्तित्व के लिए एक भीषण चुनौती है। यशपाल जी ने देश में फैलने वाली साम्प्रदायिकता का कारण विभाजन के पहले की उस गन्दी राजनीति, नेताओं के छद्म तथा अवसरवादिता को माना है, जिसके कारण विभाजन के पश्चात देश साम्प्रदायिकता की आग में जल गया। सदियों से साथ–साथ रहने वाले हिन्दू–मुस्लिम भाई–भाई कब एक दूसरे के खून के प्यासे बन जाते हैं, यह उन्हें खुद नहीं पता चलता। यशपाल जी के कथा साहित्य में यह यथार्थ रूप से चित्रित हुआ है।

संदर्भ–

1.चन्द्र, विपिन–कम्युनिज्म इन मॉडर्न इंडिया, विकास पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, संस्करण–1984, पृ0–1.2.वही, पृ0–5. 3.वही, पृ0–219–220. 4.सहगल, डॉ0मनमोहन–कथाकार यशपाल, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, संस्करण–2007, पृ0–35. 5.वही, पृ0–146. 6.गुप्त, डॉ0चमनलाल–यशपाल के उपन्यासः सामाजिक कथ्य, अक्षरा प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण–1995, पृ0–90.

21.संत साहित्य की उपादेयता (संत नामदेव जी के संदर्भ में)

–डॉ. सरवदे प्रदीप रेवाप्पा
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
तुळजाराम चतुरचंद महाविद्यालय,बारामती,ता.बारामती,जि.पुणे.

भारत देश संत महात्माओं एवं समाजसुधारकों की पावन भूमि है। इस पुनीत भूमि में महाराष्ट्र में संतों की एक विशिष्ट एवं दीर्घ परंपरा रही है, जिसे 'वारकरी संप्रदाय' के रूप में जाना जाता है। इन संतों की यह विशेषता रही है कि इन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से केवल भारतवर्ष को ही नहीं, तो विश्व को सदाचार, मानवता एवं विश्व शांति का महत्वपूर्ण संदेश दिया है। साथ ही परिवर्तनवादी विचारों की बीज बोने का भी महत्वपूर्ण कार्य किया है। महाराष्ट्र के बहुत–से ऐसे संत कवि हैं, जिन्होंने मराठी के साथ–साथ हिंदी में भी काव्य रचना की है। इन संत कवियों में संत नामदेव, संत एकनाथ, संत तुकाराम, संत तुकडोजी महाराज, संत देवनाथ तथा बहिणाबाई आदि का नाम उल्लेखनीय हैं। इन सभी संत कवियों ने हिंदी में काव्य रचना कर हिंदी साहित्य को समृदय बनाने में अपना साहित्यिक योगदान प्रदान किया है। इन संतों ने मातृभाषा के साथ–साथ जनभाषा तथा संपर्क भाषा के रूप में हिंदी भाषा के महत्व को पहचान कर उसे अपनाया। उत्तर भारत में भ्रमण कर इन्होंने हिंदी भाषा में अपनी पद रचना करके अपने भागवत धर्म को पूरे भारत से अवगत कराया। इन संतों में सबसे अग्रणी हैं–संत नामदेव।

मराठी संत परंपरा में संत नामदेव का नाम अग्रगण्य है। वे एक युग प्रवर्तक एवं महापुरुष थे। 'उनका जन्म सन 1270 में महाराष्ट्र के जिला सातारा के नरसी बामणी गाँव में कार्तिक शुक्ल एकादशी को हुआ था। उनके पिता का नाम दामाशेटी और माता का नाम गोणाई था। उनका परिवार भगवान विठ्ठल का परमभक्त था।'1 गरीब दर्जी के घर में जन्में नामदेव पंढरपुर के विठ्ठल के भक्त थे। वे वैवाहिक जीवन जीने वाले गृहस्थ व्यक्ति थे लेकिन बचपन से ही परिवार में विठ्ठल भक्ति का माहोल होने के कारण उनका मन संसार में नहीं रमा। इसीलिए उन्होंने पंढरपुर में जाकर विठ्ठल की भक्ति की। विट्ठल संप्रदाय में दीक्षित होने के बाद उन्होंने विसोबा खेचर को अपना गुरु माना। आरंभिक दिनों में वे सगुणोपासक थे, किंतु ज्ञानयोगी संत ज्ञानेश्वर तथा गुरु विसोबा खेचर की कृपा से संत नामदेव जी को ईश्वर की सर्वव्यापकता का बोध हुआ। आरंभ में सगुणोपासना के अभंग गाने वाले नामदेव बाद में परमात्मा के शुद्ध निर्गुण स्वरूप पर भी अभंग गाने लगे।

Scanned with CamScanner

संत नामदेव, संत ज्ञानेश्वर के समकालीन थे और उम्र से उनसे 5 साल बड़े थे। संत ज्ञानेश्वर जी ने जिस भागवत धर्म की शुरुआत की थी, उस भागवत धर्म प्रचार–प्रसार करने के लिए वे संत ज्ञानेश्वर जी के साथ उत्तर भारत चले गए थे। लेकिन 'संत ज्ञानेश्वर मारवाड़ में कोलदर्जी नामक स्थान तक ही नामदेव के साथ गए और वहाँ से लौटवार उन्होंने आलंदी में समाधी ले ली। संत ज्ञानेश्वर के वियोग में नामदेव का मन पंढरपुर से उघट गया और वे पंजाब की ओर चले गए।'2 पंजाब के गुरदासपुर जिले के घोमान स्थल पर रहकर ही उन्होंने उत्तर भारत की यात्रा कर भागवत धर्म का प्रचार प्रसार किया। इस तरह उन्होंने अपनी भक्ति पताका को महाराष्ट्र के साथ–साथ पंजाब, राजस्थान तथा उत्तरी भारत के कई स्थानों में फहराया।संत नामदेव मूल महाराष्ट्र के होते हुए भी पंजाब के घोमान में बीस साल रहकर वहाँ को लोगों के साथ समरस हुए थे। वहीं 'उनके विष्णुस्वामी, बाहरेदास, जालतो सुनार, लपा खत्री और केशव कलाधारी ये पंजाबी शिष्य थे।'3 पंजाब के अधिकाश दर्जी संत नामदेव के संप्रदाय के हैं, उन्हें 'चिंपा' या 'छिपा' कहते हैं। 4 घोमान में आज भी नामदेव जी का मंदिर विद्यमान है। यहाँ सीमित क्षेत्र में इनका 'पंथ' भी चल रहा है। पंजाब के साथ उत्तर प्रदेश और राजस्थान में भी उनके मंदिर हैं।

हिंदी में निर्गुण भक्ति काव्य परंपरा का निर्माण करने का कार्य सर्व प्रथम संत नामदेव ने ही किया है। 'प्रायः हिंदी के अधिकतर विद्वानों ने संत साप्रदाय के प्रवर्तन का श्रेय कबीरादास को दिया है, जबकि इस श्रेय के वास्तविक अधिकारी नामदेव ठहरते हैं।'5 संत नामदेव को हिंदी निर्गुण भक्ति के प्रवर्तक होने का सम्मान देते हुए आ. विनयमोहन शर्मा कहते हैं कि, "उनसे नाथ पंथियों के ज्ञानपरक निर्गुण पंथ में राग–भावना का विकास हुआ और निर्गुण भक्ति का प्रचलन हुआ।"6 संत नामदेव जी ने मराठी के साथ–साथ हिंदी में भी पद रचना करके हिंदी संतों के लिए निर्गुण भक्ति का मार्ग प्रशस्त किया। उनके मराठी में लगभग ढाई हजार पद तथा हिंदी में साढ़े तीन सौ पद मिलते हैं। उनके पदों के संकलन को "नामदेव गाथा" कहा जाता है। पंजाब में बीस साल तक रहने के कारण उन्हें पंजाब में पर्याप्त ख्याति और प्रतिष्ठा मिली। परिणामत सिक्खों के धर्मग्रंथ 'श्री गुरुग्रंथसाहब' में उनके 61 पद, 3 श्लोक 18 रागों में मिलते हैं, जो 'मुखबानी' के नाम से संकलित हैं। वास्तव में 'श्री गुरुग्रंथसाहब' में संत नामदेव जी की वाणी अमृत का वह निरंतर बहता झरना है, जिसमे संपूर्ण मानवता को पवित्रता प्रदान करने का सामर्थ्य है।

संत नामदेव का प्रभाव हिंदी के भक्ति साहित्य पर विशेषतः संत साहित्य पर काफी पड़ा है।7 हिंदी के अनेक संत एवं भक्त कवियों में विशेषत संत कबीर, रैदास, दादू दयाल, मीरा आदि सभी ने उन्हें बड़ा आदर और सम्मान दिया। साथ ही अपने पदों में उनका विशेष उल्लेख भी किया। संत कबीर ने नामदेव जी की स्तुति करते हुए कहा कि –"गुरु परसादी जसदेव नामा।/अगति के प्रेम इन्ह ही है जाना।"8 संत दादू दयाल ने भी उन्हें श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि –"नामदेव कबीर जुलाहा जन रैदास मरे।/दादू बेगि प्यार नहिं लागै, हरि सों सबै सरैं।"9 गुरुनानक जी ने भी संत नामदेव के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की है। सिक्खों के चौथे गुरु रामदास ने नामदेव जी को 'महाभगवद भक्त' संबोधित किया है, तो पाँचवे गुरु अर्जुनदेव ने 'नाम नारायण नाही भेद' कहकर नामदेव जी को नारायण स्वरूप प्रतिष्ठित किया है। गुजरात के आदि कवि नरसी मेहता ने भी संत नामदेव के प्रति अपना अपार स्नेह और कृतज्ञता व्यक्त की। मीरा के पदों पर भी संत नामदेव की वाणी का प्रभाव अधिक मात्रा में नजर आता है। इस तरह उत्तरी भारत के संतों ने संत नामदेव जी का स्मरण बड़े आदर से किया है।

संत नामदेव आरंभिक दिनों में सगुणोपासक थे। वे विठ्ठल की सगुण भक्ति मानते थे, लेकिन जब वे उत्तर भारत में आते हैं तो उनकी सगुण भक्ति निर्गुण भक्ति में परिवर्तित होती है। जिस ईश्वर को विठ्ठल कहते हैं, उसी विठ्ठल को वे राम, हरि केशव, माधव, गोविद कहने लगे। आरंभ में सगुणोपासना के अभंग गाने वाले संत नामदेव बाद में परमात्मा के शुद्ध निर्गुण स्वरूप पर भी अभंग गाने लगे। आगे चलकर नामदेव जी को इसी निर्गुण भक्ति का ज्ञान संत कबीर, रैदास तथा अन्य कवियों को प्राप्त हुआ। यह संत नामदेव जी का हिंदी साहित्य में बहुमूल्य योगदान है। संत नामदेव के समय समाज में वर्ण व्यवस्था तथा जाति–पाँती के बंधन अधिक कड़े हो गए थे। उत्तर भारत में भ्रमण करते समय उन्हें हिंदू और मुसलमान इन दोनों जातियों में धार्मिक तथा सामाजिक कट्टरता दिखाई दी। इस धार्मिक कटटराता का विरोध करते हुए वे कहते हैं –"हिन्दू अन्धा तुरकौ काना, दुवौ ते ज्ञानी सयाना।/हिन्दू पूजै देहरा, मुसलमान मसीत।/नामा वही सेविये जहाँ देहरा न मसीत ।"10

संत नामदेव ने अंधःविश्वास और रूढ़ी परंपराओं के अंधेरे में पड़ी हुई अज्ञानी जनता को ज्ञान का नया प्रकाश दिया। मंदिर प्रवेश पर रोक लगाने वाले समाज को ईश्वर भक्ति का मार्ग सबके लिए खुला है, ऐसा महत्त्वपूर्ण संदेश दिया। भक्ति के नाम पर चलने वाले बाह्याडंबर, पाखंड, दिखावटीपन, पूजा–पाठ आदि

Scanned with CamScanner

का विरोध कर ऐसी भक्ति को व्यर्थ माना है। अपना कर्म करते हुए अपना मन ईश्वर के चरणों में समर्पित करने का उपदेश देते हुए वे कहते हैं–"सांपु कुंच छोड़ै बिखु निहिं छोड़ै।/उदय माहि जैसे बगु धिआनु मांडे।/काहेकऊ कीजै धिआनु जपना ।/जब ते सुधु नाही मनु अपना"।"11 संत नामदेव जी ने मूर्तिपूजा का विरोध किया है और ईश्वर पूजा तथा मानवता की पूजा को महत्त्व देते हुए कहा है कि –"आंगणि देव पिछ कौडि पूजा।/पाहन पूजि भए नर दूजा।"12 उन्होंने समाज में व्याप्त जातियता का विरोध किया है। इस जाति–पाँति का जंजीरों में जकड़े हुए समाज को उपदेश देते हुए वे कहते हैं–"का करौ जाती का करौ पांती।/राजाराम सेऊ दिन राती।/ हरि का नाम जपौ दिन राती।"13 उन्होंने सांसारिक माया, मोह, विषय वासना को झूठ और क्षणिक मानकर ईश्वर भक्ति को ही सत्य और अक्षय माना है। जैसे –"विठ्ठल जाती पाती गुरुगोत विठ्ठल,/नामा का स्वामी प्राण विठ्ठल।"14

इस तरह संत नामदेव ने हिंदी पर रचना के दवारा पूरे मानव समाज को दया, अहिंसा, क्षमा, करुणा, त्याग, सत्संग, सदाचार, पतिव्रत्य, परोपकार और काम, क्रोध, अंहकारादि का त्याग आदि नैतिक मूल्यों के आधार पर जीवनयापन करने का महत्वपूर्ण उपदेश दिया। उनके यह मानवतावादि विचार आज भी भारतीय समाज के लिए प्रेरणादायी एवं प्रासंगिक है। इसलिए संत नामदेव जैसे संतो के साहित्य की उपयोगिता हमारे समाज को हमेशा है और रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ :–

(1)http://m-hindi webdunia.com (2)मराठी संतों की वाणी–संपा.आनंदप्रकाश दीक्षित,पृ.15 (3)वही,पृ.20 (4)वही, पृ.31(5)हिंदी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ–डॉ.शिवकुमार शर्मा, पृ.120 (6)हिंदी साहित्य को मराठी संतों की देन–आ.विनय मोहन शर्मा पृ. (7)हिंदी साहित्य का सही इतिहास–डॉ.चंद्रभानु वेदालंकार पृ.61 (8)हिंदी साहित्य तथा भाषा को महाराष्ट्र की देन–डॉ.रणजीत जाधव, पृ.63 (9)मराठी संतों की वाणी–संपा. आनंदप्रकाश दीक्षितपृ.10 (10)हिंदी साहित्य तथा भाषा को महाराष्ट्र की देन डॉ. रणजीत जाधव, पृ.64 (11)वही, पृ.64 (12)वही, पृ.65 (13)वही, पृ.66 (14)वही, पृ.65

Scanned with CamScanner